हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की | दुष्ट दलन रघुनाथ कला की | |

जाके बल से गिरिवर कांपे | रोग दोष जाके निकट न झांके | |

अंजनि पुत्र महा बलदाई | सन्तन के प्रभु सदा सहाई | |

दे बीरा रघुनाथ पठाए | लंका जारि सिया सुधि लाए | |

लंका सो कोट समुद्र सी खाई | जात पवनसुत बार न लाई | |

लंका जारि असुर संहारे | सियारामजी के काज सवारे | |

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे | आनि संजीवन प्राण उबारे | |

पैठि पाताल तोरि जम-कारे | अहिरावण की भुजा उखारे | |

बाएं भुजा असुरदल मारे | दाहिने भुजा संतजन तारे | |

सुर नर मुनिजन आरती उतारें | जय जय जय हनुमान उचारें | |

कंचन थार कपूर लौ छाई | आरती करत अंजना माई | |

लंक विध्वंश किये रघुराई | तुलसीदास प्रभु आरती गाई ||

जो हनुमानजी की आरती गावे | बसि बैकुण्ठ परम पद पावे | |

www.hanumanchalisalyric.com